11

''एकता को बनाए रखकर अपनी बुलाहट के योग्य चाल चलो''

(4:1-3)

इफिसियों के नाम पत्र का दूसरा भाग (अध्याय 4—6) कलीसिया के जीवन के लिए व्यावहारिक प्रासंगिकता देता है। यहां पौलुस की शिक्षा परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में महिमा प्राप्त कलीसिया के उद्देश्य के सम्बन्ध में पहले ही उसकी बताई सच्चाइयों पर आधारित थी (अध्याय 1—3)। उसके द्वारा दी गई व्यावहारिक प्रासंगिकता को चार भागों में बांटा जा सकता है जिनमें प्रत्येक में ''चलना'' की अवश्य माननीय बात है।[1] यह निर्देश जब कलीसिया के जीवन में माने जाते हैं तो 3:14-21 वाली प्रार्थना का उत्तर दिखाई देता है।

अध्याय 4 में पौलुस ने पहले कलीसिया की बुलाहट ''के योग्य चाल चलने'' की इफिसियों से विनती की थी (4:1)। फिर उसने उन दो ढंगों की बात की जिन से यह पाया जा सकता है: एक होकर (4:2-16) और अपने मनों की आत्मा में नये होकर (4:17-32)।

बुलाए जाने के योग्य चाल चलना (4:1)

[1]सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से विनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।

आयत 1. सो इफिसी भाइयों को उनके नाम अपने पत्र में पौलुस की कही पहली बात से जोड़ता है। उसे अपने आपको **प्रभु में बन्धुआ** कहा, क्योंकि पत्र लिखने के समय वह रोम की जेल में था। इस तथ्य को कि अपने काम के कारण उसे जेल जाना पड़ा था उसकी अपील के लिए अतिरिक्त बल रहा होगा।

पौलुस के अन्य कुछ पत्रों की तरह यहां भी **विनती करता** (*parakaleō*) या ''आग्रह'' (NIV) का इस्तेमाल यहां पत्र के शिक्षा सम्बन्धी भाग से व्यावहारिक प्रासंगिकता में बदलने के परिचय के लिए हुआ है (देखें रोमियों 12:1; फिलिप्पियों 4:2; 1 थिस्सलुनीकियों 4:1, 10)। नये नियम में इस क्रिया के तीन बड़े उपयोग हैं: (1) ''सहायता मांगना, विनती, आग्रह करना''; (2) ''शांति देना''; या (3) जैसा कि आयत 1 में है, ''समझाना।''[2] पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल प्रेरित होने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के लिए नहीं किया, बल्कि मसीह के लिए जो कुछ उसने दुख उठाया था और पाठकों से अपनी वेतनता के आधार पर अपने पाठकों को इसकी विनती की। उसने ''विनती करता'' शब्द का इस्तेमाल ''सो'' के साथ किया, इस का अर्थ यह है कि पौलुस उसके आधार पर जो उसने पत्र के पहले भाग में लिखा था उनके

लिए किए गए परमेश्वर के काम के आधार पर इफिसियों की ओर से सही व्यवहार करने को कह रहा था।

मसीही लोगों को पौलुस की शिक्षा और **चाल चलो** 4:1 में पहली बार मिलता है। ''चाल'' (''रहना''; NIV) *peripateō* का अनुवाद है। LXX यानी सप्तत्ति अनुवाद में इस क्रिया शब्द का इस्तेमाल इब्रानी शब्द *halak* है जिसका अर्थ है ''नैतिक व्यवहार या जीने का ढंग।''[3] पौलुस इफिसियों को [अपनी] **बुलाहट के योग्य चाल** चलने को या सही आचरण करने को समझा रहा था।

''योग्य'' *axiōs* का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''उपयुक्त रूप में, होने के ढंग में; *जिस चीज़ से जोड़ा गया है उस* की कीमत के बराबर ढंग से।''[4] एक और जगह पौलुस ने मसीही लोगों को लिखते हुए रहने के योग्य होने की अवधारणा का इस्तेमाल आम तौर पर किया। फिलिप्पियों 1:27 में उसने लिखा, ''केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो'' (देखें कुलुस्सियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। लोगों को परमेश्वर द्वारा आम तौर पर सुसमाचार के प्रचार के द्वारा बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14); जब वे आज्ञापालन के द्वारा सुसमाचार को ग्रहण करते हैं तो वे ''बुलाए गए'' बन जाते हैं (रोमियों 1:6)।

तुम बुलाए गए कालांतर में ईश्वरीय पहल के साथ-साथ मसीही बनने के समय कालांतर में उनका सक्रिय रूप में इसे मानना है। वर्तमान में उन्हें उसके अनुसार जीवन जीना आवश्यक था जो वे मसीह में बन गए थे। ईश्वरीय पहल और मनुष्य का उसे स्वीकार करना साथ-साथ चलते हैं। जब कोई व्यक्ति मसीह में होने की आशिषों को स्वीकार कर लेता है, तो उसे उन जिम्मेदारियों को भी स्वीकार करना आवश्यक है जो परमेश्वर की बुलाहट के साथ जुड़ी हैं।

पौलुस की अपील वैकल्पिक नहीं बल्कि यह मसीह में होने और उसकी देह अर्थात कलीसिया का अंग होने के कारण तर्कसंगत थी। मसीह में एक होकर योग्य चाल चलने की अपनी चर्चा (4:2-16) में पहले उसने बताया कि सही व्यवहार के लिए यह एकता कैसे आवश्यक है।

अपने प्रति सही व्यवहार (4:2)

[2]अर्थात सारी दीनता सहित।

आयत 2. दीनता *tapeinophrosunē* का अनुवाद है जो बाहरी व्यवहार को दर्शाता है जिसे ''मन का दीन होना'' बताया जाता है।[5] यूनानी-रोमी संसार में गुलामी से जुड़े होने के कारण यह शब्द नकारात्मक माना जाता था।[6] परन्तु यहूदी विचार में ''दीनता'' उन निर्धनों से जुड़ा शब्द था जिन्हें परमेश्वर की दृष्टि में ऊंचा किया जाता था। नये नियम में दीनता को अहंकार या घमण्ड से अलग बताया गया है (देखें 1 पतरस 5:5) और विश्वास के समुदाय में यह एक महत्वपूर्ण गुण है। फिलिप्पियों 2:3 कहता है, ''विरोध या झूठी बढ़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।'' अन्तिम दीनता मसीह का संसार में आना और सब लोगों के लिए मरना था (फिलिप्पियों 2:5-8)।

घमण्ड एकता का शत्रु है। घमण्ड अपने ही तरीके पर ज़ोर देता है, यहां तक कि विचार और

प्राथमिकता के मामलों में भी। परमेश्वर ''अभिमानियों का विरोध करता है,'' (याकूब 4:6)। यह समझ आ जाने पर कि ''जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आपको न समझे'' (रोमियों 12:3) व्यक्ति आवश्यक कदम उठा चुका होता है। अपने प्रति उचित व्यवहार एकता की पहली शर्त है।

दूसरों के प्रति सही व्यवहार (4:2)

[2]और नम्रता और धीरज धरकर प्रेम से एक-दूसरे की सह लो।

आयत 2. नम्रता यूनानी संज्ञा शब्द *prautēs* का अनुवाद है ऐसा गुण जिसमें ''शिष्टाचार, विचारशीलता और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा या लाभ की चिंता किए बिना सब की भलाई में रुकावट बनने वाले अपने अधिकारों को त्याग देने की तैयारी'' का गुण शामिल है।[7] यह गुण मसीह की विशेषता भी था (2 कुरिन्थियों 10:1) और आत्मा के फल का भाग भी है (गलातियों 5:23)। यह पौलुस के व्यवहार का वर्णन करता है जिसमें उसने समस्याओं से गिरे कुरिन्थियों से व्यवहार किया (1 कुरिन्थियों 4:21) और उसने अपने विरोधियों का सामना करने पर जवान प्रचारक तीमुथियुस की सराहना की (2 तीमुथियुस 2:24, 25)।

धीरज *makrothumia* का अनुवाद है परन्तु नये नियम के अन्य कई पदों में ''धीरज'' *hupomonē* का भी अनुवाद है। इस आयत में NKJV में *makrothumia* का अनुवाद ''longsuffering'' (धीरज) हुआ है। रिचर्ड सी. ट्रेंच ने दोनों शब्दों में अन्तर किया है:

> *Makrothumia [चिर सहिष्णुता]* व्यक्तियों के साथ धीरज व्यक्त करने के लिए मिलेगा जबकि *hupomonē* वस्तुओं के सम्बन्ध में। व्यक्ति [जो चिर सहिषुण है वह है] जो घायल लोगों के साथ ''वह उनके द्वारा भड़काए जाकर आसानी से दुखी नहीं होता या क्रोध में भड़क नहीं उठता'' [2 तीमुथियुस 4:2] व्यक्ति [जो धीरजवान है वह है] जो परीक्षाओं के बड़े घेरे में, सह लेता है और हिम्मत या हौसला नहीं हारता।[8]

Makrothumia में लोगों के साथ धीरजवान होने के साथ साथ धैर्य होने का विचार भी हो सकता है।[9] पौलुस यहां पर मानवीय सम्बन्धों की बात कर रहा था, इस कारण उसने इसका इस्तेमाल बाद वाले अर्थ में ही किया होगा। इफिसुस की कलीसिया में एकता बनाए रखने के लिए इन मसीही लोगों के लिए विचार और व्यक्तिगत कमियों के अन्तरों के सम्बन्ध में एक-दूसरे के साथ धीरज रखने वाले होना सीखना आवश्यक था।

धीरज धरकर प्रेम से एक-दूसरे की सह लो। धीरज पर पौलुस टिप्पणियों को विस्तार दे देता है। ''धीरज धरकर'' का अर्थ लोगों के बीच कमियों और उनके अन्तरों को सहते रहना है। संसार को परमेश्वर की मंशा को बताने के लिए उसके माध्यम के रूप में फोकस में कलीसिया की बड़ी तस्वीर को रखने के साथ साथ कलीसिया का पौलुस का दर्शन मानवीय निर्मलता और मतभेदों को समझना भी था। नम्र और धीरजवान होने की उनकी प्रेरणा ''प्रेम'' होना था जिससे वे दूसरों के साथ सम्मान से व्यवहार करने, उनके साथ भलाई करने और उन्हें परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करने का निर्णय था। बिना प्रेरित के मसीही एकता

असम्भव होनी थी।

एकता को बनाए रखना (4:3)

[3]और मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

आयत 3. एकता के लिए मंच तैयार कर लेने के बाद पौलुस ने स्पष्ट रूप में कहा कि योग्य चाल चलने में कलीसिया की एकता शामिल है। इन मसीही लोगों के लिए **यत्न** करने वाले (*spoudazō*) होना और उस **एकता** को जो **आत्मा** ने कलीसिया में लाई थी बनाए रखने में कोई कसर न छोड़ना था। ''हमारा मेल'' (2:14) यीशु ने यहूदियों और अन्यजातियों को ''एक देह में'' (2:16) एक दूसरे से और परमेश्वर से मिला दिया था। देह के अंगों के लिए **मेल के बन्ध** (*sundesmos*) जिससे उन्हें पहले ही मसीह में इकट्ठे किया गया था, बनाए रखने का हर प्रयास करना था।

कलीसिया की एकता को बनाए रखना और बचाए रखना आवश्यक है क्योंकि मसीही लोग मेल और एकता करवाने वाले लोग हैं। यह एकता न केवल बनाए रखना आवश्यक है, बल्कि इसे हमारी दीनता, नम्रता, धीरज और एक दूसरे को सहने में भी देखा जाना चाहिए। पौलुस ने ''सात एकों'' की सूची दी, यानी उन सात सच्चाइयों की जिन पर कलीसिया एक होनी चाहिए (4:4-6)।

प्रासंगिकता

योग्य चाल चलने के पांच गुण (4:2, 3)

इफिसियों को योग्य चाल चलने की चुनौती देते हुए पौलुस ने ऐसी चाल की पांच विशेषताएं बताईं (4:2, 3)। इन गुणों के बिना व्यक्ति पौलुस के पत्र के शेष निर्देश का विद्रोह कर सकता है। परन्तु जहां यह गुण पाए जाते हैं वहां पर मसीही व्यक्ति का व्यवहार परमेश्वर की बुलाहट से मेल खाएगा।

दीनता (4:2)। हमारी तरफ से पूरी तरह से दीन होना आवश्यक है। दीनता का अर्थ यह नहीं है कि अपने आपको छोटे मानकर चलना है; इसका अर्थ अपने आप पर विचार करना कदापि नहीं है। आखिर हमारे बुलाए जाने में हमारा कोई योगदान नहीं है। आत्मिक रूप में हम जो कुछ भी हैं वह हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह से हैं। इसलिए घमण्ड के लिए कोई स्थान ही नहीं है।

इच्छा किए जाने के गुण के रूप में दीनता यूनानियों और रोमियों के लिए एक क्रांतिक अवधारणा थी। ''धीनता'' के लिए श्रेष्ठ शब्द में स्वभाव की नीचता का सुझाव था यानी इसे अपमानजक गुण के रूप में देखा जाता था। नये नियम के लेखों के बाहर इस शब्द का इस्तेमाल किसी के लिए भी जो निर्बल या कायर हो अपमानजनक ढंग से इस्तेमाल किया जाता था।

मसीही लोगों के लिए एक नये शब्द का आविष्कार करना होगा, जिसमें एक नई अवधारणा होगी। बाइबली दीनता लोगों को अपना अनुचित लाभ लेने की अनुमति देना नहीं है और न

ही इसे साहस की कमी का सुझाव है। सच्ची दीनता का अर्थ है कि हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के निर्देश को बिना संदेह के मानते हुए उसके सामने दे देते हैं क्योंकि हमें इस बात का अहसास है कि बिना इसकी सहायता के अपने अनन्त भविष्य को बदलने के लिए हम शक्तिहीन होंगे।

दीन होने का अर्थ है कि हम अपने मनों और हृदयों को यीशु पर लगाए रखते हैं। अब हम अपने जीवनों को चलाने की इच्छा नहीं करते बल्कि हम उसका निर्देशन, उसकी हिदायत चाहते हैं। अब स्वार्थ सिंहासन पर नहीं है, बल्कि उसके स्थान पर यीशु है।

नम्रता (4:2)। दीनता को नम्रता या विनम्रता से समर्थन मिलना आवश्यक है। नम्रता क्या है ? यह कायरता नहीं है। कुछ लोग विनम्रता का अर्थ ''जोश और हिम्मत की कमी'' बताते हैं, पर यह बाइबल की परिभाषा नहीं है।

नम्रता सामर्थ की कमी नहीं है। यह कायर व्यक्तित्व नहीं है जिसमें जैली फिश की तरह मज़बूती से खड़े होने की योग्यता न हो। यह दृढ़ विश्वास की कमी नहीं है जिससे व्यक्ति किसी के साथ भी सहमत हो जाए। बाइबली नम्रता ''वश में शक्ति'' है।

पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द का मूल अर्थ ''जंगली जानवरों को पालतू बनाना'' था। प्राचीन मध्यपूर्व के जंगली अरबी घोड़े की कल्पना करें। कुछ लोग उस घोड़े को रस्सी से बांधकर बाड़े में कैद कर लेते हैं। उसकी पीठ पर कभी काठी नहीं रखी गई थी। उसके सिर पर लगाम या मुंह में दहाना कभी नहीं लगा था। ये लोग क्या करते हैं जिससे वे इस बड़े घोड़े को इस्तेमाल कर सकें। वे उसे ''साधते'' हैं। यानी वे एक के बाद एक कौशल से उस घोड़े को यहां तक ले आते हैं कि वह अपने मुंह में दहाना, अपने सिर पर लगाम और अपनी पीठ पर काठी रखने देता है। अन्त में यह शक्तिशाली, ताकत से भरा जानवर काबू में कर लिया जाता है। उसकी ताकत और जोश और सामर्थ अभी भी है पर अब वे किसी दूसरे के वश में है। वह स्वेच्छा से अपने सवार की आज्ञा को मानने लगता है। यूनानी लोग इसे ''नम्र हो गया'' कहते थे।

आत्मिक रूप में तो हम में से हर किसी के साथ ऐसा ही होता है। हम स्वार्थी प्रेरणाओं, भूख और अभिलाषा से भरे संसार में जन्म लेते हैं। अब पूरी तरह से दीनता के कारण हमें इन सब को प्रभु के वश में कर देना आवश्यक है। ऐसा होने पर हमारा व्यवहार सुसमाचार के द्वारा हमारी उच्च बुलाहट के साथ मेल खाने लगता है।

धीरज (4:2)। यदि हम अपने बुलाए जाने के अनुसार रहना चाहते हैं तो धीरजवान होना आवश्यक है। ''धीरज'' के लिए प्राचीन यूनानियों में दो शब्द पाए जाते हैं। एक का सम्बन्ध परिस्थितियों के साथ लोगों के निपटने का ढंग था और दूसरा लोगों के बीच सम्बन्धों के निपटने का ढंग। पौलुस ने बाद वाले अर्थ के साथ इस शब्द का इस्तेमाल किया।

धीरज रखने वाले होने का अर्थ दूसरों के साथ जिन्होंने हमें दुख पहुंचाया है बदला लेने में धीमा होना है। वास्तव में धीरजवान व्यक्ति नाराज भी जल्दी से नहीं होता। पौलुस के शब्द का मूल अर्थ है ''जल्दी से क्रोध न करने वाला होना।'' हम में झल्लाहट नहीं है या हम दूसरों पर चिड़ते नहीं हैं।

योग्य चाल चलने का अर्थ है कि हम उसे करने के लिए जो सही है अपमान, घाव, सताव, अनुचित व्यवहार, बदनामी, झूठी निंदा, आलोचना, घृणा और द्वेष भी सह लें। यह नकारात्मक

परिस्थितियों को और उन लोगों को जो बिना कड़वाहट या शिकायत के इसका कारण बनते हैं, स्वीकार कर लेना है।

क्या यह बेतुका नहीं लगता? तो फिर हमें अपने आस पास संसार से अलग कौन सी बात करती है? यदि यीशु इस प्रकार से रहा, जो कि है भी, तो हमें भी जीवन के इसी गुण के लिए बुलाया गया है।

सहना (4:2)। हमें प्रेम से एक दूसरे को सहना आवश्यक है। यह सहना धीरज से अलग कैसे है? यह धीरज के भीतरी मन की बाहरी कार्य है। दूसरों को सहने का अर्थ यह नहीं है कि हम उनकी कमियों या उनके दोषों से अनजान हैं। बल्कि यह समझते हुए कि हम सिद्ध नहीं हैं, हम यह मान लेते हैं कि दूसरे लोग भी सिद्ध नहीं हैं। हम केवल यह नहीं कहते, ''मैं न चाहते हुए इस व्यक्ति को सहन करूंगा।'' इसके बजाय प्रेम में हम उस व्यक्ति की भलाई चाहते सेवा करना जारी रखते हैं। अन्य शब्दों में यह किसी दूसरे मसीही के लिए जो असफलता के लिए कमरे से ऐसे बाहर जाता है, जैसे वह व्यक्ति जो प्रभु की देह में मज़बूत बनने के लिए संघर्ष करता है, अत्यधिक प्रेम का व्यवहार है।

एकता की इच्छा (4:3)। संगति में एकता की तीव्र इच्छा के बिना परमेश्वर के सामने कोई भी योग्य चाल नहीं चल सकता है। हम केवल एकता की बड़ी इच्छा नहीं रख सकते हैं बल्कि हमें एक-दूसरे के साथ अपने सम्बन्धों में इसे वास्तविकता बनाने के लिए ''यह'' करना आवश्यक है। ''यह'' के लिए पौलुस का शब्द दो यूनानी शब्दों का मेल है। एक का अर्थ ''जल्दी करना'' है जबकि दूसरे का अर्थ जोशीला प्रयास। कुल मिलाकर उसके शब्दों का अर्थ कुछ इस प्रकार से हो सकता है: ''जल्दी करें और एकता को पाने के लिए काम करें!''

फिर भी ध्यान दें कि एकता बनाने का काम हमारा नहीं है। परमेश्वर के आत्मा ने हमें क्रूस पर बहे मसीह के लहू के द्वारा उस में हमें एकता दी है। हम परमेश्वर की नज़र में एक किए गए हैं। क्योंकि उसने हम सब को एक देह में खींचा है। योग्य चाल चलन की विशेषता यह है कि हम एक दूसरे के साथ अपने प्रतिदिन के सम्बन्धों में मेल में एकता को बनाए रखने का हर प्रयास करते हैं। हम आत्मिक रूप में वह सब देंगे जो एक दूसरे के साथ हमारी सहभागिता को बनाए रखने के लिए हमारे अन्दर है। हम दूसरों के विरुद्ध अपने पापों का अंगीकार करेंगे; हम क्षतिपूर्ति करने के लिए आक्रामक होंगे और क्षमा माने जाने से भी पहले इसे देने का तैयार होंगे। क्या टूटे सम्बन्ध को बहाल करने की पहल से बढ़कर कोई और बात हमें परमेश्वर के जैसे बना सकती है? हम कलीसिया की एकता को बनाए रखने में सहायता के लिए कितना यत्न करते हैं उसी से पता चलता है कि हम परमेश्वर द्वारा दी हमारी बुलाहट के अनुसार कितना चल रहे हैं।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]''चलना'' का विशेष ताड़ना के रूप में इस्तेमाल करने वाली आयतें हैं 4:1; 5:2, 8, 15. इन चार चालों पर ध्यान दिलाते विभाजन हैं 4:1-32; 5:1-6; 5:7-14; 5:15—6:20. [2]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 234. [3]वही, 94. [4]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए*

क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कंकोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 904. [5]लिंकोन, 235. [6]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट*, संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:320 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''ए एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [7]लिंकोन, 236. [8]रिचर्ड सी. ट्रेंच, *सिनोनिम्स ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 198. [9]लिंकोन, 236.